



मेवाड़ का शेर: महाराणा प्रताप

Pradeep Singh



कुंभलगढ़ के भव्य किले में एक तेजस्वी बालक का जन्म हुआ, जिसका नाम प्रताप रखा गया। बचपन से ही प्रताप की आँखों में अपनी मातृभूमि के लिए अपार प्रेम और युद्ध कला के प्रति गहरी रुचि दिखा देती थी।



जब प्रताप मेवाड़ के सिंहासन पर बैठे, तो चारों ओर मुगल साम्राज्य का विस्तार हो रहा था। उन्होंने दृढ़ संकल्प के साथ प्रतिज्ञा की कि जब तक वे चित्तौड़ को मुक्त नहीं करा लेते, वे महलों का सुख त्याग कर जमीन पर सोएंगे और पत्तलों पर भोजन करेंगे।



अरावली की दुर्गम पहाड़ियों के बीच प्रताप ने अपनी सेना को संगठित किया, जिसमें स्थानीय भील जनजाति के वीर योद्धा भी शामिल थे। उन्होंने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए छापामार युद्ध नीति का कठिन अभ्यास शुरू किया।



हल्दीघाटी के मैदान में एक ऐतिहासिक और भीषण युद्ध छिड़ गया जहाँ प्रताप अपने प्रिय और वफादार घोड़े चेतक पर सवार होकर बिजत की गति से शत्रुओं के बीच पहुँच गए। चारों ओर तलवारों की खनक 3 वीरों की हुंकार गूँज रही थी।



युद्ध के मैदान में जब प्रताप संकट में घिरे थे, तब उनके स्वामीभक्त घोड़े चेतक ने एक विशाल नाले के ऊपर से अविश्वसनीय छलांग लगाव अपने स्वामी की जान बचाई। इस महान बलिदान के बाद चेतक ने वीरगति प्राप्त की, जिससे प्रताप अत्यंत भावुक हो उठे।



महलों के ऐश्वर्य को छोड़कर प्रताप अपने परिवार के साथ घने जंगलों में रहने लगे। वहाँ उन्होंने घास की रोटियाँ खाकर दिन गुजारे, लेकिन अपनी स्वतंत्रता और स्वाभिमान का सौदा कभी किसी शक्तिशाली शासक से नहीं किया।



एक कठिन समय में जब संसाधनों की कमी थी, तब मेवाड़ के दानवीर मंत्री भामाशाह ने अपनी सारी संचित संपत्ति प्रताप के चरणों में अर्पित कर दी। इस निस्वार्थ मदद ने मेवाड़ की सेना में फिर से नया जं और शक्ति भर दी।



नई ऊर्जा और संसाधनों के साथ प्रताप ने एक बार फिर मुगलों पर जोरदार आक्रमण किया और एक-एक करके अपने खोए हुए किलों को जीतना शुरू किया। उनकी वीरता की कहानियाँ पूरे आर्यावर्त में गर्व के साथ सुनी जाने लगीं।



प्रताप ने दिवेर के युद्ध में एक शानदार विजय प्राप्त की और मेवा के अधिकांश हिस्से को स्वतंत्र करा लिया। उनकी तलवार की धार और अटूट संकल्प ने यह साबित कर दिया कि स्वतंत्रता से अनमोल कुछ नहीं है।



महाराणा प्रताप ने एक स्वतंत्र और गौरवान्वित मेवाड़ की विरासत छोड़कर इस नश्वर संसार से विदा ली। आज भी वे वीरता, अटूट देशर्भा और स्वाभिमान के एक अमर प्रतीक के रूप में हर भारतीय के दिल में जीवित हैं।